प्राचीन भारतीय इतिहास के अंकनार्थ सिक्कों का महत्त्व

आलोक कुमार सिन्हा*

प्राचीन इतिहास के अंकनार्थ साक्ष्य के रूप में सिक्कों का विशिष्ट स्थान है। यद्यपि सिक्कों का निमार्ण अपने समय की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति, क्रय–विक्रय तथा लेन–देन को दृष्टि में रखते हुए हुआ तथापि कालान्तर में ये इतिहास के अनेक अज्ञात एवं अल्पज्ञात पक्षों के उद्‌घाटन में सहायक सिद्ध हुई है।[1] इतिहास एवं पुरातत्व प्रेमियों के लिए सिक्कों के इतिहास की जानकारी बहुत महत्त्वपूर्ण है। सिक्कों पर अंकित लेखों और लिपियों के माध्यम से कई बार अज्ञात तथा सामने आते हैं और संदिग्ध समझे जाने वाले तथ्यों की पुष्टि होती है।

दरअसल, में सिक्कें मूक नहीं होती हैं, वे बोलती हैं, अपने समय की सभ्यता, संस्कृति और कला की जानकारी देती है। सिक्कें हमारे इतिहास–ज्ञान के ठोस साधन है। प्राचीन भारत के इतिहास के पुनर्निर्माण में सिक्कों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यदि सिक्कें नहीं मिलती तो प्राचीन भारत में कितने ही राजा और राजवंश गुगनाम ही बने रहते।[2] इसलिए सिक्कों की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता।

इतिहास के स्रोत सामग्री के मामले में भारत की स्थिति बड़ी दयनीय है। प्राचीन भारत में इतिहास–पद्धति के बहुत कम ग्रंथें की रचना हुई है। इसलिए प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के पुनर्निर्माण में जुटे हुए विद्वानों को पुरातत्त्व की सामग्री पर अधिक आश्रित रहना पड़ता है।रामायण–महाभारत और पुराणों जैसे ग्रंथों की अपेक्षा शिलालेखों, तामपत्रों, मूर्तियों तथा पुराने सिक्कों के अध्ययन–अन्वेषण से इतिहास की अधिक प्रमाणिक जानकारी प्राप्त होती है।

सिक्कों के अध्ययन से संबंधित प्रारम्भिक विद्वानों ने मुख्यतः सिक्कों के आकार–प्रकार, उन पर अंकित प्रतीकों, आकृतियों, लेखों तथा उनके धातु आदि के अध्ययन को ही महत्त्व दिया। उन्होंने प्राप्त सिक्कों तथा उसके प्राप्ति के सीान और उसके भूमिस्थ होने के समय को यथेष्ठ महत्व नहीं दिया जो अनेक दृष्टियों से उपयोगी था। किन्तु कालान्तर में इस दृष्टि से भी सिक्कों का अध्ययन प्रारम्भ हुआ। लेकिन अब इस बात पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है कि कोई भी सिक्का किस स्थान से प्राप्त हुई है और किस काल खण्ड से इसे भूमि से निक्षिप्त किया गया है। यदि कोई सिक्का पुरातात्विक उत्खनन से मिलती है तो यह भी जानना आवश्यक हो जाता है कि वह उत्खनन के किस स्तर से सम्बद्ध है, क्योंकि पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त सिक्के उस स्तर से प्राप्त अन्य भौतिक उपकरणों के काल निर्धारण में सहायक होती है। इस प्रकार सिक्कों के इतिहास के जरिये विभिन्न कालखण्डों और राजवंशों के इतिहास के संबंध में प्रमाणिक तथ्य सामने आते हैं।

सिक्कों में अपने समय का सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आर्थिक इतिहास छिपा रहता है। प्राचीन भारत का चाहे राजनैतिक इतिहास हो चाहे सामाजिक, चाहे सास्कृतिक इतिहास हो चाहे आर्थिक, चाहे कालानुक्रम का निर्धारण ही क्यों न हो या चाहे पुरातात्विक स्तरों का सम्यक अध्ययन, इन सबों में सिक्कों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका सर्वत्र दर्ज की है। कभी–कभी तो जहाँ कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं होते वहाँ इतिहास के उन पक्षों को आलोकित करने का काम सिक्का को ही करना पड़ता है।[3]

सिक्कों के विभिन्न आकार–प्रकार, उन पर अंकित प्रतीक, आकृतियाँ, अभिलेख आदि राजनैतिक इतिहास के ज्ञान हेतु अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुए हैं। सिक्कों पर प्रायः राजाओं की उपाधियाँ तथा कभी–कभी तिथियाँ भी अंकित मिलती है। इनसे रानीतिक इतिहास का अध्ययन अधिक स्पष्ट और प्रमाणित हो जाता है। कुषाणों एवं गुप्तों के सिक्कों पर अंकित तिथियाँ तिथिक्रम के निर्धारण में सहायक सिद्ध हुई है। सिक्कों से कतिपय महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओं का भी ज्ञान होता है। डी0आर0भण्डारकर[4] तथा एस0के0मैती[5] ने सिक्कों के आधार पर अनेक राजनैतिक महत्त्व की घटनाओं को उद्‌घाटित करने का प्रयत्न किया है। जैसा कि पुराणों में सातवाहनों के बारे में परस्पर–विरोधी सूचनाएँ है, मगर सिक्कों के मिल जाने से उसका इतिहास काफी स्पष्ट हो गया है और क्षत्रपों के साथ उनके संबंधों के बारे में जानकारी मिली है।[6] कुषाण वंश में कनिष्क नामधारी तीन राजाओं का ज्ञान भी हमें मुख्यतः सिक्कों द्वारा ही हुआ है। इस प्रकार भारतीय राजनीतिक इतिहास में महत्त्व की दृष्टि से अन्ततः साक्ष्य के रूप में सिक्कों की सर्वाधिक उपयोगिता है।

सिक्कों से धार्मिक इतिहास के बारे में भी बड़े महत्व की सजानकारी मिलती है। हिन्द–यवनों, शकों, कुषाणों, हुणों और क्षत्रपों के सिक्कों से स्पष्ट पता चलता है कि उन्होंने ब्राहम्ण या बौद्ध धर्म–सम्प्रदायों को बहुत जल्दी अपना लिया था। मानव–रूप देवताओं की आकृतियाँ सर्वप्रथम इन्हीं शासकों के सिक्कों पर देखने को मिलती है। इनमें से कई शासकों के सिक्कों पर शिव (देवता) और नन्दी की आकृतियाँ अंकित है। इससे पता चलता है कि उस समय पश्चिमोत्तर भारत

***जे0आर0एफ0 शोधार्थी इतिहास विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना।**

में शैव सम्प्रदाय का काफी अधिक प्रभाव था। कनिष्क के एक सिक्के पर बुद्ध की आकृति है। वायु देवता के लिए आज देश में कोई मंदिर नहीं है, लेकिन कनिष्क के एक सिक्के पर वायु देवता की आकृति अंकित है। सिक्कों से ही पता चलता है कि हूण हमलावर मिहिरकूल शिव के नन्दी का उपासक था। बाहर से आये इन शासकों ने जल्दी ही भारतीय नाम अपना लिए थे। पश्चिम भारत पर शासन करने वाले 27 क्षत्रप शासकों में से 25 के नाम भारतीय है– रूद्रदामन, रूद्रसेन, रूद्रसिंह, जयदामन आदि। भारत पर श्शासन करने वाले विदेशी शासक भारतीय परम्परा में इतने रंग गये थे कि अपने सिक्कों पर धार्मिक प्रतीकों के अंकन के अतिरिक्त स्वतः का नाम भी भारतीय परम्परानुसार धारण करने लगे। कुषाण नरेश वासुदेव का नाम इस तथ्य का प्रबल संज्ञापक माना जा सकता है।[7]

इस तरह सिक्का जिसका संबंध विशुद्ध रूप से व्यापारिक होता है, वहाँ भी धार्मिक प्रतीकों तथा देवी–देवताओं का अंकन इस बात का साक्षी है कि मानव के तन–मन में धर्म किस प्रकार रच–बस गया था। इसका प्रभाव केवल भारतीय शासकों के सिक्कों पर ही नहीं, वरन विदेशी शासकों के सिक्कों पर भी देखा जा सकता है। जहाँ एक ओर हिन्द–यवन शासकों के सिक्कों पर यूनानी देवता जीयस, देराक्ल, अपोलो, नाइके इत्यादि का अंकन है तो वहीं दूसरी ओर भारतीय प्रतीक 'चक्रधर कृष्ण' और 'हलधर बलराम' का भी अंकन देखने को मिलता है।[8] निश्चित तौर पर बाहर से आये शासकों ने भारतीय देवी–देवताओं को बखूबी अपनाया। जो उसकी धार्मिक सहिष्णुता एवं उदारता का घोतक है।

सिक्कों से तत्कालीन आर्थिक दशा के बारे में भी बड़ी उपयोगी जानकारी मिलती है। चूँकि सिक्कों की उत्पत्ति मूलतः आर्थिक समस्याओं के समाधान हेतु हुई है। अतएव सिक्कों से आर्थिक इतिहास पर प्रकाश पड़ना स्वाभाविक है। सिक्कों की धातु, उनका आकार, उनकी तौल, उन पर अंकित प्रतीक, उनके प्राप्ति स्थल, आदि किस तरह न्यूनाधिक रूप से आर्थिक इतिहास पर प्रकाश डालते हैं।[9] सिक्का के लिए आवश्यक धातु कहाँ से प्राप्त होती थी, इस तथ्य का विवेचन भी आर्थिक इतिहास के अध्ययन में सहायक सिद्ध हुआ है।[10] क्योंकि सोना चॉदी और ताम्बे के सिक्के अपनी क्रय क्षमता के बारे में महत्वपूर्ण सूचनाएँ देते हैं। सिक्कों की धातु में की गई मिलावट से भी तत्कालीन आर्थिक दशा पर प्रकाश पड़ता है। बड़े सौदों में सोने और चॉदी के सिक्कों का ही ज्यादा इस्तेमाल होता था। जैसे गुप्तकाल में दो–तीन स्वर्ण मुद्राओं (दीनारों) में ही बहुत सारी जमीन खरीदी जा सकती थी। छोटे–मोटे सौदों में ताम्बे और सीसे के सिक्कों का व्यवहार होता था। रोजमर्रा की छोटी–मोटी जरूरतों के लिए देश के कई प्रदेशों में कौड़ियों का चलन था।

लेकिन यह भी सच है कि गुप्त राजाओं द्वारा जारी किये गये सोने के सिक्कों की तादाद कुषाण स्वर्ण–सिक्कों से ज्यादा है, लेकिन अगर हम भारत में मिले सोने के रोमन सिक्कों को भी श्शामिल करके देखें तो दोनों कालों की स्वर्ण–मुद्राओं की संख्या लगभग बराबर आयेगी। स्वर्ण सिक्कों की बहुतायत एवं चॉदी तथा तांबे के सिक्कों की कमी गुप्तकालीन आर्थिक जीवन की गई गुत्थियों को सुलझा सकती है।[11] गुप्तयुग के तत्काल बाद मुद्रा निर्माण में कमी आर्थिक और राजनीतिक जीवन में सामन्तवादी प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप हुई हो। कतिपय गुप्त अभिलेखों में सन्दर्भित विशेष कथनों के आधार पर स्वर्ण तथा रजत सिक्कों की क्रय–क्षमता का भी अनुमान किया जाता है।

प्रतीकों के अंकन को भी आर्थिक इतिहास के निर्माण में उपयोगी बताया गया है। जैसे सातवाहन और पल्लव सिक्कों पर जहाज का अंकन एक मुख्य आर्थिक उपकरण के रूप में ग्रहण किया जाता है। जिन सिक्कों पर अलंकरण की प्रवृति अधिक दिखाई पड़ती है उनके संबंध में एल0के0त्रिपाठी का अभिमत है कि ऐसा कहा जा सकता है कि तत्संबंधी समाज मे आर्थिक सुशांति बहाल थी। कभी–कभी मुंद्राकित लेख आर्थिक स्थिति की ओर संकेत करते हैं जैसे मुद्रांकित ''बहु धानरूके'' शब्द निश्चित रूप से आर्थिक महत्त्व का सम्बोधक है। इन मुद्राओं के प्राप्ति स्थल भी आर्थिक इतिहास के अध्ययन में हमारी मदद करते हैं। इनके प्राप्ति स्थल निश्चित रूप से सम्बंधित क्षेत्र को आर्थिक क्रिया कलाप के केन्द्र के रूप में इंगित करते हैं और इनमें प्राचीन व्यापारिक मार्गो की ओर संकेत मिलता है। कौशाम्बी से कनिष्क, हुविज्यक तथा वासुदेव के सिक्के प्राप्त हुए है। इन सिक्कों की प्राप्ति तथा कनिष्क की मुहर के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि यह नगर–व्यापार का प्रतिष्ठित केन्द्र था और यहाँ पर स्थल तथा जल दोनों मार्गो से व्यापार होता था।[12] इसके सन्दर्भ साहित्य में भी ढूढ़ें जा सकते हैं। इस तरह मुद्रा निधियाँ अपने आप में आर्थिक स्थिति की सम्बोधक मानी जाती है। मुद्रा निधियों के प्राप्ति स्थल भी आर्थिक इतिहास पर रोचक प्रकाश डालते हैं। कुषाण कालीन भारत और अबीसीनिया के बीच व्यापारिक सम्बन्ध की पुष्टि करती है। इसी प्रकार दक्षिण भारत के कतिपय सीलों से रोमन मुद्रा नीतियों की प्राप्ति भारत और रोम के बीच घनिष्ट व्यापारिक संबंध को प्रकट करती है। इस प्रकार इतिहास निरूपण के लिए मुद्राओं और मुद्रानिधियों के प्राप्ति क्षेत्र से अवगत होता है तो आवश्यकहै ही साथ ही यह जानना आवश्यक है कि किसी मुद्रानिधि को भूमिस्थ कब किया गया।[13]

लिपि एवं भाषा विषयक अध्ययन में भी सिक्कों का अपना महत्त्व है। अक्सर ऐसा देखा जाता है कि सिक्कों पर अंकित लिपि और भाषा तथा समकालीन

अभिलेखों पर अंकित लिपि और भाषा से कतिपय महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जाते हैं। कभी–कभी मुद्रांकित लिपि और भाषा का प्रयोग भाषा और लिपि के विकास के इतिहास को स्पस्ट करने में हमारी मदद करते हैं। साथ ही मुद्रांकित लिपियों का अध्ययन अक्षर आकारों के विकास का स्वरूप एवं अनुकरण की प्रवृत्ति को जानने हेतु भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

प्राचीन भारतीय मुद्राएँ कला एवं प्रतिभा लक्षण के अध्ययन की दिशा में भी सहायक सिद्ध हुई है। इस दृष्टि से मुख्यतः जे0एन0बनर्जी[14] एवं भाष्कर चट्टोपध्याय ने मुद्राओं का गहन अध्ययन किया है। कला के इतिहास के लिए महत्वपूर्ण मौद्रिक साक्ष्य के रूप में कुषाण मुद्राओं को उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है। जिन पर अनेक देशों से संबंधित देवी–देवताओं की आकृतियॉ अंकित है।

सिक्कों के अध्ययन से सांस्कृतिक जीवन पर भी प्रकाश पड़ता है। एम0के0धवलिकर ने बाख्त्री यवन–कुषाण एवं गुप्त मुद्राओं के आधार पर प्राचीन भारत के सांस्कृतिक जीवनका जिक्र किया है तथा समकालीन समाज में प्रचलित कला–कौशल, वाज्ञाभूषण, आमोद–प्रमोद, केश सज्जा, गृह सज्जा के उपकरण आयुद्ध कवच, रथ आदि के प्रकारों का विस्तृत विवेचन किया है।[15] मुद्रा पर अंकित राजा और रानी की आकृतियों से संबंधित युग के आभूषण वेषभूषा इत्यादि की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। इन मुद्राओं से भौतिक जीवन की एक झलक मिलती है। प्राचीन भारत के आरम्भिक पंचमार्क या आहरा सिक्के लगभग कला शून्य है मगर हिन्द यवन, कुषाण क्षत्रपो एवं गुप्त शासकों के सिक्के कलापूर्ण हैं। कुषाण नरेशों को उनके सिक्कों पर ईरानी वस्तु (चोंगा) पहने हुए दिखलाया गया है। समद्रगुप्त को उसके एवं सिक्के पर वीणा बजाते हुए चिन्हित किया गया है। अवश्वमेध यज्ञ के अवसर पर विशेष सिक्के जारी किये जाते थे। सिक्के प्राचीन व्यापार व्यवस्था एवं व्यापारी मार्गो के बारे में भी महत्व की सूचनाएँ देते हैं। ईसा की आरम्भिक दो–तीन सदियों में भारत और रोम के बीच जो व्यापारिक संबंध रहे हैं उसके कारण ही बहुत सारी रोमन स्वर्ण मुद्राएँ भारत में आयी थीं। इनकी प्राप्ति स्थानों से तत्कालीन व्यापार–व्यवस्था के बारे में नई बातें जानने को मिली है।[16] लेकिन जो भी हो, सिक्कों के अध्ययन से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि जिस विदेशी परम्परा का प्रभाव भारतीय सिक्कों पर हिन्द–यवन शाससकों के सिक्कों के कारण दिखाई दे रहा था वह धीरे–धीरे समाप्त होने लगा और बाद में चलकर उनका शुद्ध भारतीयकरण हो गया। यह प्रभाव केवल मुद्रा कला में ही नहीं वरन भारतीय अन्य कलाओं पर भी दृष्टिगोचर होता है जो धीरे–धीरे आगे चलकर परिवर्तित हो गये। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सब कुछ विदेशी प्रभाव से ही ओत–प्रोत हो गया था, लेकिन हॉ, देशीपन के साथ–साथ विदेशी तत्वों की

भूमिका को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता जिनका शुद्ध भारतीयकरण होने में समय लगा। यद्यपि सांस्कृतिक आदान–प्रदान की अपनी एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है इससे अछुता नहीं रहा जा सकता। इस प्रकार मौद्रिक साक्ष्यों के माध्यम से भी एक सीमा तक भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन में मदद मिलती है।[17]

निश्चित तौर पर सिक्कों की महत्ता उसकी प्राचीनता को दर्शाता है। सिक्के हमारी अमूल्य सांस्कृतिक सम्पदा हैं जो इतिहास और सांस्कृति को ठीक से समझने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इस सांस्कृतिक सम्पदा को समुचित सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है कि हमें पुरानी सिक्कों की पहचान और उसके ऐतिहासिक–सांस्कृतिक महत्व की समुचित जानकारी हो सके।

सन्दर्भ

1. राजवन्त राव एवं प्रदीप कुमार राव, प्राचीन भारतीय मुद्रायें, दिल्ली, 2016, चतुर्थ संस्करण, पृ0 03
2. गुणाकर मूले, भारतीय सिक्कों का इतिहास, नई दिल्ली, 2014, पृ0 14
3. आनन्द शंकर सिंह, भारत की प्राचीन मुद्राएँ, इलाहाबाद, 2004 पृ0 1
4. डी0आर0 भण्डारसकर, एन्विूयेन्ट इंउिरून न्यूमेस्मेटिक्स कामाइकेल लेक्चर, कलकत्ता, 1921 पृ0 408–94
5. एस0के0मैती, अर्ली इंडियन क्वायन्स एण्ड करेंसी सिस्टम, नई दिल्ली, 1970, पृ0 309
6. गुणाकर मूले, पूर्वोद्धत, पृ0 15
7. आनन्द शंकर सिंह, पूर्वोद्धत, पृ0 11
8. वही
9. एल0के0त्रिपाठी,क्वायन्स ऐज सोर्स ऑफ इकोनामिक हिस्ट्री, जे0एन0एस0 आई0, भाल्यूम–33, पृ0 14
10. राम शरण शर्मा, क्वायन्स एण्ड प्राब्लम्स ऑफ अर्ली इंडियन हिस्ट्री, जे0एन0एस0आई0 भाल्यूम–31 खण्ड 1 पृ0 18
11. कुमार अमरेन्द्र, गुप्तकालीन भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था (लगभग 300ई0–550ई0) पटना 2001, पृ0 18
12. आनन्द शंकर सिंह, पूर्वोद्धत, पृ0 20
13. परमेश्वरी लाल गुप्त, भारत के पूर्वकालिक सिक्के वाराणसी (तृतीय संस्करण) 2006, पृ0 16–17
14. जे0एन0 बनर्जी द डेवलपमेंट ऑफ हिन्द आइकोनोग्राफी, पृ0 108–17
15. एम0के0 धवलिकर, क्वायन्नेज एण्डकल्चरल लाइफ, जे0एन0एस0आई0, 35 पृ0 194–95
16. गुणाकर मूले, पूर्वोद्धत, पृ0 20
17. एच0सी0 राम चौधरी, पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एन्शियेन्ट इंडिया, कलकत्ता, 1953, पृ0 399–400